दूषित पानी से मौतों पर नीमच में कांग्रेस का प्रदर्शन, घंटा बजाकर जताया विरोध

विधायक निवास का घेराव किया, मंत्री विजयवर्गीय का इस्तीफा मांगा

नीमच। जिले में जिला कांग्रेस कमेटी ने इंदौर जल त्रासदी के विरोध में प्रदर्शन किया। दूषित पानी पीने से 15 से अधिक लोगों की मौत और कई लोगों के अस्पताल में भर्ती होने की घटना के बाद प्रदेश कांग्रेस के आह्वान पर यह प्रदर्शन किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के इस्तीफे की मांग की।

यह प्रदर्शन शहर के गांधी भवन से शुरू हुआ, जहाँ बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एकत्रित हुए। कार्यकर्ता हाथों में 'घंटा' लेकर सरकार के खिलाफ विरोध रैली में शामिल हुए। प्रदर्शनकारी नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे।

रैली विधायक दिलीप सिंह परिहार के निवास पर पहुंची, जहाँ कांग्रेसियों ने घंटे बजाकर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस नेताओं ने इस घटना के लिए विभाग और मंत्री की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराते हुए कैलाश विजयवर्गीय से तत्काल इस्तीफे की मांग की।

कांग्रेस ने चेतावनी दी है कि जब तक मंत्री का इस्तीफा नहीं होता और पीड़ितों को न्याय नहीं मिलता, तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा। विधायक निवास के घेराव के दौरान पुलिस प्रशासन पूरी तरह अलर्ट रहा। बंगले को बैरिकेड्स लगाकर सुरक्षित किया गया था। सीएसपी किरण चौहान, केंट थाना प्रभारी निलेश अवस्थी और सिटी थाना प्रभारी पुष्पा चौहान सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात रहा, जिससे प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच गहमागहमी बनी रही।

एक नजर में

टंकी की सफाई कार्य कर पानी को स्वच्छ किया

नयागांव। नगर परिषद नयागांव द्वारा नगर के नागरिकों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाए जाने है वार्ड 12 पुरानी परिषद में स्थित पानी की टंकी की सफाई कार्य कर आवश्यक जल शुद्धिकरण के केमिकल डाले जाकर पानी को स्वच्छ किया गया। उक्त कार्यवाही कलेक्टर के आदेशानुसार मुख्य नगरपालिका अधिकारी एवं परिषद अध्यक्ष मुकेश जाट के निर्देशन में कई गयी तथा नगर में पेयजल पाइप लाइन लिकेजिंग का कार्य भी ततपरता पूर्वक किया जा रहा है।

नीमच बस स्टैंड पर सीबीएन की बड़ी कार्रवाई, यात्री बस से अफीम बरामद, एक युवक गिरफ्तार

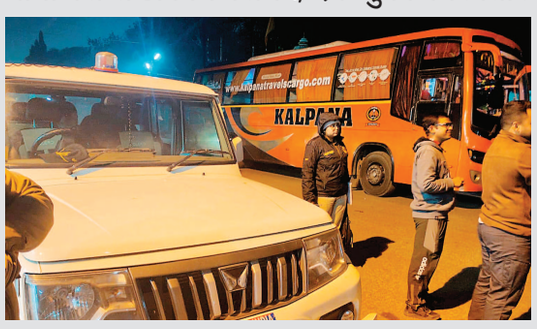

नीमच। मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत केंद्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सीबीएन) नीमच ने देर रात बड़ी कार्रवाई करते हुए तस्करों पर करारा प्रहार किया है। सीबीएन टीम ने पुख्ता सूचना के आधार पर राजस्थान की ओर जा रही कल्पना ट्रेवल्स की एक यात्री बस को नीमच बस स्टैंड पर रोका और सघन तलाशी अभियान चलाया। तलाशी के दौरान बस में सवार एक युवक के कब्जे से अफीम बरामद की गई, जिससे हड़कंप मच गया। कार्रवाई के दौरान सीबीएन अधिकारियों ने मौके से आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया, वहीं मादक पदार्थों की तस्करी में उपयोग की जा रही बस को भी जब्त कर लिया गया है। अफीम की बरामदगी के बाद पूरे मामले को एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज किया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में तस्करी के नेटवर्क से जुड़े अहम सुराग मिलने की संभावना जताई जा रही है। सीबीएन अधिकारी अब यह पता लगाने में जुटे हैं कि अफीम की यह खेप कहां से लाई गई थी और इसे कहां पहुंचाया जाना था। साथ ही, इस तस्करी से जुड़े अन्य संभावित आरोपियों और पूरे नेटवर्क की कड़ियों को भी खंगाला जा रहा है। सीबीएन की इस सख्त कार्रवाई से तस्करों में हड़कंप मचा हुआ है।

प्राचीन भादरा माताजी मंदिर बाणदा जहाँ सच्चे मन से मांगी गई हर मुराद होती है पूरी

सिंगोली। भादरा माता मंदिर एक बहुत ही प्रसिद्ध और पवित्र मंदिर है, जो नीमच सिंगोली मेन सड़क से जेतल्या होते हुए बाणदा पहुंचता है, जो मेन सड़क से लगभग 10 किलोमीटर दूर है। जन चर्चा के आधार पर ऐसा कहा जाता है इस मंदिर में भूत-प्रेत, डायन और हर तरह की समस्याओं का समाधान होता है। भादरा माताजी को बहुत ही शक्तिशाली और पूज्यनीय माना जाता है। कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति सच्चे मन से उनकी आराधना करता है, उसके जीवन में भय और बाधाएं समाप्त हो जाती हैं। माता भादरा के दर्शन मात्र से ही भक्तों के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और उनकी हर मनोकामना पूरी होती है। इस प्राचीन मंदिर की विशेषता यह है कि यहां पर डकैत भी डकैती से पहले माता का आशीर्वाद लेने आते थे। यह मंदिर आदिवासी अंचल बाणदा के घाट के ऊपर है, जिसमें जंगली जानवर आया करते थे। मंदिर में माता भादरा की मूर्तियां बनी हुई हैं और यहां पर बिजली पानी की व्यवस्था भी है। प्रतिवर्ष माताजी के भक्त यहां पहुंच मन्नत पुरी होने पर रातीजगा, हवन, यज्ञ आदि धार्मिक आयोजन करते रहते हैं। नवरात्रि के अवसर पर मंदिर को विशेष रूप से सजाया जाता है और भक्तों के लिए विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। बाणदा ग्रामवासी लाभचंद चौहान एवं मंदिर पुजारी भोपा ने बताया कि भील समाज इसे कुलदेवी के रूप में पूजने लगे हैं। माता भादरा की महिमा करीब 100 वर्षों से सुचारू रूप से बनी हुई है और प्रतिवर्ष माताजी के भक्त यहां पहुंचकर अपनी मुनोकामनाएं पूरी होने की प्रार्थना करते हैं।

ऐतिहासिक प्रभात फेरी महा-संगम से गुंजायमान हुआ मनासा 125 गांवों की श्रीराम प्रभात फेरियों का अभूतपूर्व संगम

मनासा। मंदिरों की नगरी मनासा रविवार, 4 जनवरी को एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व धार्मिक आयोजन की साक्षी बनी। पहली बार मालवा-मेवाड़ अंचल के 125 गांवों व नगरों से निकाली गई श्रीराम प्रभात फेरियों का भव्य महा-संगम मनासा में आयोजित हुआ। यह अवसर नगर के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हो गया, जब 2000 से अधिक श्रद्धालु एक साथ प्रभात फेरियों में सहभागी बने। प्रभात फेरियों के स्वागत में पूरा नगर दुल्हन की तरह सजा नजर आया। जगह-जगह स्वागत द्वार, तोरणद्वार, भगवा पताकाएं और आकर्षक सजावट की गई। सामाजिक संगठनों, विभिन्न समाजों एवं राजनीतिक दलों ने इस धार्मिक आयोजन के स्वागत में बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाई।

राष्ट्रीय कहार महासंघ जिला नीमच कार्यकारिणी बैठक संपन्न

नीमच। राष्ट्रीय कहार महासंघ जिला नीमच की कार्यकारिणी बैठक 4 जनवरी 2026 रविवार को गांधी वाटिका जिला नीमच सुबह 11:30 आयोजित की गई जिसमें संभागीय स्तर पर कहांर महासंघ राष्ट्रीय सामाजिक संगठन से मनोनीत नीमच जिला अध्यक्ष मनोज जी मेहरा को पूर्व में जिला अध्यक्ष घोषित किया गया था, जिला अध्यक्ष श्री मनोज जी मेहरा व कहांर समाज के समाज जनों ने मिलकर रविवार को गांधी वाटिका में 8 सदस्य जिला नीमच की कार्यकारिणी गठित की, जिसमें जिला उपाध्यक्ष श्री रवि बाथम नगर पालिका नीमच, जिला महासचिव श्री जगदीश मेहरा नया बाजार नीमच, जिला संगठन सचिव श्री अभिषेक ग्वालटोली नीमच, जिला कोषाध्यक्ष श्री सतीश मेहरा ग्वालटोली नीमच, जिला मीडिया प्रभारी दीपक मेहरा ग्वालटोली, जिला प्रचार मंत्री श्री मुकुल मेहरा ग्वालटोली, जिला कार्यालय सचिव श्री रविंद्र बाथम धनेरिया रोड बघाना नीमच को कार्यकारिणी सदस्य सर्व सहमति से नियुक्त किया।

सभी नल संयोजनधारी नलों में टोटिया अवश्य लगाएं

नीमच। शहरी क्षेत्र नीमच में निकाय की पेयजल पाइपलाइन द्वारा लिए गए समस्त कनेक्शन धारी अपने नल कनेक्शन पर टोटीया अवश्य लगावे । आम जनता द्वारा कभी कभी पेयजल भरने के बाद नल की नलियों को नालियों या गंदे स्थान पर ही डाल दिया जाता है जिसके कारण भी गंदा पानी आने की संभावना बनी रहती है। उक्त बात एक प्रेस नोट में कहते हुए नगर पालिका परिषद नीमच की मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती दुर्गा बामनिया ने कहां की निकाय द्वारा नल संयोजनधारीयों से पूर्व में भी नलों में टोटिया लगाने हेतु अनुरोध किया गया था! शहर की जनता से पुन: आग्रह है कि नल की नलियों पर टोटियां लगाना सुनिश्चित करें ताकि दूषित पानी पाइपलाइन में प्रवेश न कर सके और आम जनता को शुद्ध पानी का वितरण किया जा सके।

नीमच में पहली बार एशियन वाटर बर्डसेंसस

प्रवासी पक्षी भी मिले, ग्रेट व्हाइट पेलिकन, कॉमन टील, रूडीशेल डक मिले

नीमच। जल स्त्रोतों और जल पक्षियों के संरक्षण को मजबूत बनाने मध्य प्रदेश में पहली बार एशियन वाटर बर्ड गणना(ए डब्ल्यू सी) के तहत नीमच में तीन और चार जनवरी 2026 को वन विभाग और नीमच बर्ड्स ग्रुप ने जलीय पक्षी सर्वेक्षण व गणना कार्य संपन्न किया।

वन विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार वनमंडलाधिकारी श्री एस के अटोदे के निर्देशन व एसडीओ फॉरेस्ट नोडल ऑफिसर श्री दशरथ अखंड के नेतृत्व में सिटीजन साइंस को बढ़ावा देने नीमच बर्ड्स ग्रुप के पक्षी विज्ञानी एवं पक्षी प्रेमियों के साथ यह कार्य पूर्ण हो रहा है। इस सर्वेक्षण में विशेष रूप से प्रवासी पक्षी की दुर्लभ प्रजाति ग्रेट व्हाइट पेलिकन जो अपनी बड़ी चोंच और विशाल नीचे लटकती थैली के लिए जाना जाता है के साथ, कॉमन टील, रूडिशल डक की उपस्थिति दर्ज की गई। साथ ही रेयर पक्षी ओरिएंटल डार्टर, कोरमोरेंट इग्रेट, पॉन्ड हैरान, पर्पल और ग्रे हेरॉन, लेसर विसलिंग डक, यूरेशियन कूट, नॉब बिल्ड डक, स्टिल्ट, रिवर टर्न, इंडियन स्पॉट बिल्ड डक, ग्रीब, आईबीस, स्वंप हेन, स्टोरक की प्रजातियां देखी गई। साथ ही आसपास के क्षेत्र में विशेषत: प्रवासी पक्षी हमस वारब्लर, रेड ब्रेस्टेड फ्लाइकेचर, साइबेरिया स्टोनचैट, थिक नी, सारस क्रेन, एशियाई बॉर्न आउल, स्पॉटेड आउल, टाउनी पीपीट, वैगटेल देखे गए। वन विभाग के कर्मचारियों के साथ शहर के नीमच बर्ड्स ग्रुप के पक्षी विशेषज्ञ डॉ. साधना सेवक, श्री इंद्रजीत सिंह, निकिता यादव, अनमोल यादव, अक्षय यति, अजय धाकड़ अंजली शर्मा ने नेतृत्व किया और साथ में पहली बार भागीदारी कर रहे जाजू कॉलेज, पीजी कॉलेज के वॉलिंटियर्स ने सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम सर्वेक्षण 3 जनवरी को शहर के प्रमुख वेटलैंड्स हमीरिया तालाब, शिवाजी सागर डेम, ठीकरिया तालाब, जीरन टुहरबार तालाब, हरकीया खाल डेम, चैनपुरा डेम, घसुंडी में किया गया। दिनांक 4 को यह सर्वेक्षण जिले के आंतरिक दूरस्थ वेटलैंड्स किरता तालाब, लासूर बांध, श्रीपुरा, कनपुरिया तालाब, जावी तालाब, अमरतीया तालाब, लासूर, में किया जा रहा है। यहां पक्षी प्रेमी प्रिंस शर्मा ने अमरतिया तालाब में 35 प्रजाति, साक्षी शर्मा, निकिता यादव ने लासूर बांध पर 43 प्रजातियां सर्वेक्षण में पाई।

पाले से फसलों की सुरक्षा के लिए किसानों को सलाह

नीमच। किसान भाईयों को पाले से फसलों की सुरक्षा एवं सर्तकता हेतु सलाह दी जाती है कि पाला का पूर्वानुमान: जिस दिन आकाश पूर्णतया साफ हो, वायु में नमी की अधिकता हो।

कड़ाके की सर्दी हो, सायंकाल के समय हवा में तापमान ज्यादा कम हो एवं भूमि का तापमान शून्य डिग्री सेंटीग्रेट अथवा इससे कम हो जाए, ऐसी स्थिति में हवा में विद्यमान नमी जल वाष्प संघनीकृत होकर ठोस अवस्था में (बर्फ) परिवर्तित हो जाता है। इस साथ ही पौधों की पत्तियों में विद्यमान जल संघनित होकर बर्फ के कण के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं जिससे पत्तियों की कोशिका भित्ती क्षतिग्रस्त हो जाती है जिससे पौधों की जीवन प्रक्रिया के साथ-साथ उत्पादन भी प्रभावित होता है।

पाला से बचाव के उपाय-पाला पड़ जाने पर नुकसान की संभावना अत्यधिक होती है। ऐसी स्थिति में किसान भाई निम्नानुसार सावधानी अपना कर फसलो को बचा सकते हैं।

पाले की संभावना पर रात में खेत में 6-8 जगह पर धुआं करना चाहिये। यह धुआं खेत में पड़े घास-फूस अथवा पत्तिया

जलाकर भी किया जा सकता है। यह प्रयोग इस प्रकार किया जाना चाहिये कि धुआं सारे खेत में छा जाए तथा खेत के आसपास का तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक आ जाए। इस प्रकार धुआं करने से फसल का पाले से बचाव किया जा सकता है।

पाले की संभावना होने पर खेत की हल्की सिंचाई कर देना चाहिये। इससे मिट्टी का तापमान बढ़ जाता है तथा नुकसान की मात्रा कम हो जाती है। सिंचाई बहुत ज्यादा नहीं करनी चाहिये तथा इतनी ही करनी चाहिये जिससे खेत गीला हो जाए।

रस्सी का उपयोग भी पाले से काफी सुरक्षा प्रदान करता है। इसके लिये दो व्यक्ति सुबह-सुबह (जितनी जल्दी हो सके) एक लंबी रस्सी को उसके दोनों सिरों से पकड़ कर खेत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक फसल को हिलाते चलने है। इससे फसल पर रात का जमा पानी गिर जाता है तथा फसल की पाले से सुरक्षा हो जाती है।

रसायन से पाला नियंत्रण वैज्ञानिकों द्वारा रसायनों का उपयोग करके भी पाले को नियंत्रित करने के संबंधी प्रयोग किये गए हैं। उदाहरणार्थ-

घुलनशील सल्फर 0.3 से 0.5 प्रतिशत् का घोल (3 से 5 एम.एल./ली. पानी के साथ)

घुलनशील सल्फर 0.3 से 0.5 प्रतिशत बोरान 0.1 प्रतिशत घोल (3 से 5 एम.एल./ली. +1 एम.एल. पानी के साथ)

गंधक के एक लीटर तेजाब को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कने से लगभग दो सप्ताह तक फसल पाले के प्रकोप से मुक्त रहती है। रसायनों विशेषतया गंधक के तेजाब का उपयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक तथा किसी कृषि विशेषज्ञ केमार्गदर्शन में ही किया जाना चाहिये।

उपरोक्त में से कोई भी एक घोल बनाकर छिड़काव करके फसल को पाले से बचाया जा सकता है।

राष्ट्रीय शालेय वुशु मार्शल आर्ट प्रतियोगिता हेतु कु.वंशिका नागलोथ एंव कु.अल्फिया मंसूरी का चयन

नीमच। 69 वी शालेय खेलकुद प्रतियोगिता अंतर्गत राष्ट्रीय शालेय वूशू मार्शल आर्ट प्रतियोगिता 19 वर्ष बालक/बालिका वर्ग का आयोजन स्कुल गेम्स फेडरेशन आफ इंडिया (स्क्स्ब्ढ्) द्वारा दिनांक 14 से 18 जनवरी 2026 तक इम्फाल (मणिपूर) में किया जा रहा है जिसमें सम्पूर्ण भारत के राज्यों की चयनीत टीमें भाग लेगी इस प्रतियोगिता में म.प्र. टीम भी भाग लेगी।

इस प्रतियोगिता हेतु नोडल खेल विद्यालय शा.बा.उ.मा.वि.क्र.2 नीमच नीमच में प्रशिक्षण प्राप्त कु.वंशिका नागलोथ पिता श्री श्यामलाल (माउंट जोन स्कुल नीमच) का - 48 कि.ग्रा. वजन समूह एंव कु.अल्फिया मंसुरी पिता श्री वसीम मंसुरी (शा.उत्कृष्ट उ.मा.वि. नीमच) का -52 कि.ग्रा.वजन समूह में म.प्र. वूशू मार्शल आर्ट टीम में चयन हुआ है। इनका चयन राज्य स्तरीय शालेय वूशू मार्शल आर्ट प्रतियोगिता जो कि ग्वालियर मे दिनांक 4 से 8 अक्टुबर 2025 तक आयोजित हुई थी मे अपने अपने वजन समुहों मे प्रथम स्थान प्राप्त करने के आधार पर हुआ है। इस प्रतियोगिता की तैयारी हेतु म.प्र. वूशू मार्शल आर्ट टीम का प्री नेशनल कोचिंग केम्प जो कि ग्वालियर मे जो कि दिनांक 07 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जाएगा में भी ये सम्मिलित होगी।

एक नजर — **वन्य प्राणियों से फसलों को नुकसान, किसान हो रहे चिंतित**

नीलगायों के झुंड बेरहमी से रौंद रही किसानों की फसलें

नीमच। नीलगाय के झुंड खेतों में घुस कर मक्का, मटर, टमाटर, चना और गेहूं की फसल को नुकसान पहुंचा रहे है। तो दूसरी तरफ आवारा मवेशी उनकी फसलों को बर्बाद कर रहे है। इससे किसान चिंतित है। शहर से लगे खेतों और आसपास के अन्य गांवों में भी वन्य प्राणी फसलों को क्षति पहुंचा रहे हैं। नीलगाय मक्का के भुट्टों को खाकर फसल को रौंद रही है। 20-25 की संख्या में रात में विचरण करने वाली नीलगाय जिस खेत में घुसती है वहां की फसल बर्बाद हो जाती है।

इस समय क्षेत्र में सैंकडों की तादात में नीलगाय क्षेत्र में मौजूद है। इससे सीमांत किसान अपनी फसलों को बचाने के लिए समय समय पर कई जतन करते है। जबकि अभी फसलें जमीन से निकल रही है जब यह स्थिति है तो फसल जब बढ़ जाएगी तब क्या होगा यह फिकर किसानों को सता रही है। किसानों को पूरी रात नीलगाय को भगाने के लिए

खेतों के आसपास घूमते फिरते बिताना पड़ती है। नील गाय इतना सजग व चतुर होते हे कि जरा सी आहट मिलते ही तुरंत भाग खड़े होते है। यह झुंड में चारों दिशाओं में मुंह करके बैठती है। कहीं से भी खतरे का संकेत मिलने पर दौड़ लगा देती है। क्षेत्र में नीलगाय फसलों को रौंद रही हैं। किसान देखकर भी इन्हें नहीं बचा पा रहा है। ठंड के कारण किसान जहां रखवाली करने में मुस्तैद नहीं रह पा रहे हैं जिसका लाभ नीलगाय उठा रही हैं। खाली मैदान छोड़कर खेतों में पहुंच रही है। नीलगाय गेहूं, चना से लेकर सब्जी व अन्य की फसल को नुकसान पहुंचा रही हैं। किसानों के लिए फसल बचाना मुश्किल हो गया है। नीलगाय खेतों में एक साथ 40 से 50 नीलगाय खेतों में एकसाथ झुंड बनाकर आती है। उस खेत चरने के अलावा फसलों बर्बाद भी कर देते है। नीलगायों से मुक्ति के लिए किसानों ने जिला प्रशासन और वन विभाग के अधिकारियों को कई बार आवेदन भी दिया, लेकिन किसानों को राहत पहुंचाने की दिशा में आज तक कोई पहल नहीं की गई। किसान बताते है कि बाइक से खेत से घर लौटते समय कई बार रास्ते में नीलगाय का झुंड आ जाता है। इसके चलते वे बाइक सहित गिर गए। नीलगाय गांव में भी घुसने से नहीं डरती है गांवों में भी कई बार आतंक मचा चुकी है व नीलगायों की वजह से आज सड़क हादसे होना आम बात हो गई है।

नुकसान का कारण-प्राकृतिक आवास का अभाव: आधुनिकीकरण और शहरीकरण के कारण इनके प्राकृतिक आवास नष्ट हो गए हैं, इसलिए ये मानव बस्तियों और कृषि भूमि की ओर रुख कर रही हैं। इंसानों की गंध से डरना: यह इंसानों की गंध से डरती हैं और इसलिए अंधेरे में, जैसे कि सुबह और शाम के समय, हमला करती हैं।

फसलों को होने वाला नुकसान

नीलगाय मक्का, गेहूं, चना, मूंग और सरसों जैसी कई फसलों को खा जाती हैं।

वे खड़ी फसलों को सिर्फ खाती ही नहीं, बल्कि अपने झुंड के साथ रौंदकर भी नुकसान पहुंचाती हैं।

ये फल जैसे कि आम, केला और अमरूद के साथ-साथ टमाटर, फूलगोभी और बैंगन जैसी सब्जियों को भी खा जाती हैं।

एक दिन की लापरवाही भी किसान की पूरी मेहनत को बर्बाद कर सकती है, क्योंकि ये फसल को किसी भी अवस्था में नुकसान पहुंचा सकती हैं।

इनका कहना

नीलगाय से फसलों को नुकसान तो हो रहा है। इसको लेकर हम भी सतर्क है मगर यह वन्यप्राणी एक जगह नहीं रहता है और यह टोली में रहते हं। इनको पकडा भी नहीं जा सकता है। शासन स्तर पर योजना बन रही है।

- एसके अटोदे, डीएफओ नीमच।